International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(1): 17-18

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(1): 17-18
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 16-10-2020
Accepted: 23-11-2020

हसन खाँ
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
हसन खाँ
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में वर्णित राजनैतिक परिदृश्य

हसन खाँ

प्रस्तावना

महाकवि भारवि समूचे संस्कृत संसार में राजनीति के प्रकाण्ड पण्डित के रूप में ख्याति लब्ध हैं काव्य में नीतिशास्त्र तथा लोकव्यवहार –सम्बन्धी तत्त्वों का प्रारम्भिक सर्गो में समावेश किया गया हैं ।इसका कारण महाकवि का कई राजाओं के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध था, और कवि का अधिक से अधिक समय राजदरबार में व्यतीत हुआ होगा । जिस कारण उनका राजनीतिविषयक तथा व्यावहारिक ज्ञान अत्यन्त समृद्ध हैं। कवि ने स्वयं के ज्ञान की इस प्रौढता कों काव्य के सरस कथानक तथा मनोरम शैली द्वारा प्रकाशित किया हैं, और निश्चित रूप से उनका यह परिश्रम किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में साकार भी हुआ हैं। कवि के इस ज्ञान की झलक सर्वत्र दृष्टिगोचर प्रतीत हो रहीं हैं। महाकवि भारवि ने अत्यन्त कुशलता के साथ राजनीति के सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्त्वों का समन्वय काव्य के कथानक के साथ स्थापित किया हैं। इस प्रकार महाकाव्य में राजनीति तथा लोकव्यवहार –विषयक वृत्तान्तों की बहुलता प्रायः देखने को मिलती है, इन नीतिपरक वृत्तान्तों की उपयोगिता जीवन में होने के कारण महाकाव्य की प्रसिद्धि का मुख्य कारण हैं।सम्प्रति महाकाव्य में वर्णित सूक्तियों की लोकोक्तियों के रूप में प्रसिद्ध हो गई हैं और इनके द्वारा कवि की नीतिकुशलता तथा व्यवहारकुशलता का सुन्दर परिचय प्राप्त होता हैं।[1]

महाकाव्य का प्रारम्भ ही राजनैतिक अवधारणा से होता हैं। प्रथम सर्ग के प्रथम श्लोक में ही कवि की राजनीतिक –कुशलता का परिचय प्राप्त होता हैं।कवि ने महाकाव्य में वनेचर के माध्यम से शत्रु की शासन– व्यवस्था, प्रजास्थिति, आर्थिक दशा इत्यादि समग्र वृत्तान्तों की जानकारी प्राप्त की जाती हैं। वनेचर की उक्तियों द्वारा राजनीति तथा लोकव्यवहार के अनेक उपयोगी तथ्यों का प्रादुर्भाव हुआ हैं। काव्य में नीतिशास्त्रीय गूढ तथ्यों का कवि ने द्रोपदी –भीम तथा अनेक पात्रों के माध्यम से वर्णन किया –

व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः ।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठा।स्तथाविधान् असंवृतान्गान्निशिता इवेषवः ।।[2]

उक्त श्लोक में कवि ने द्रोपदी के माध्यम से नीतिपरक तथ्यों को उद्घाटित किया हैं जो मनुष्य कपटियों के प्रति स्वयं कपटी नहीं बनते, विवेकरहित वे मनुष्य सर्वत्र पराजय को प्राप्त करतें हैं, क्योंकि कुटिल व्यक्ति उस प्रकार के व्यक्तियों के शरीर में प्रवेश करके कवच इत्यादि से आरक्षित देह वाले पुरूषों को मारने वाले अत्यन्त तीक्ष्ण वाणों की तरह, आत्मीय बनकर मार डालते हैं।

प्रमुख रूप से उत्तेजित द्रोपदी तथा भीम को प्रकृतिस्थ बनाने के लिए युधिष्ठर के जो शान्ति प्रधान उत्तर हैं, उनमें यर्थाथतः नीति तथा जीवनोपयोगी मूल्यों का सुन्दर रीति से प्रकाशन किया गया हैं, और इन प्रधान पात्रों के मुख से भारवि ने अपनी नीतिकुशलता तथा व्यवहारकुशलता सुन्दर परिचय दिया भीमसेन प्रियतमा द्रोपदी की उक्तियों का समर्थन करतें हुए कहते हैं –

विषमोऽपि विगाह्यते नयः कृततीर्थः पयसामिवाशयः।
स तु तत्र विशेषदुर्लभः सदुपन्यस्यति कृत्यवर्त्म यः।।

भीमसेन के माध्यम से कवि कहते है कि दुरावगाह होने पर भी सीढियों का निर्माण कर दिये जाने पर (प्रवेश योग्य) जलाशय की तरह अत्यन्त दुर्बोध होने पर भी नीतिशास्त्र अभ्यास करने पर सुबोध हो जाता हैं, किन्तु जलाशय तथा नीतिशास्त्र के विषय में इस प्रकार का महापुरूष अत्यन्त विरल होता हैं,

जो गर्त – पाषाण इत्यादि स्खलन से रहित प्रवेश हेतु सोपानों का निर्माण करता हैं तथा देश काल के अनुकूल संधि – विग्रह – यान –आसन –द्वैधीभाव– समाश्रयरूप उपायों का उपदेश देता हैं।
साम– दाम– दण्ड –भेद नामक राजनीति के चतुर्विध उपायों, प्रभु – मन्त्र – उत्साह त्रिविध शक्तियों, सन्धि – विग्रह इत्यादि अंगों की सूक्ष्मताओं पर कवि ने शास्त्रसम्मत उपयोगी गहन विचारों को प्रस्तुत किया हैं ओर इनके महत्व का निरूपण किया हैं।
निः सपत्न राज्य की चतुर्दिक् समृद्धि के लिए विवेकपूर्वक इनके समुचित विनियोग पर बल दिया हैं।राजलक्ष्मी का स्थायित्व इन पर आश्रित हैं। किरातार्जुनीयम् का दुर्योधन साम –दाम–दण्ड – भेद इन सभी उपायों के प्रयोग में अत्यन्त कुशल हैं । कार्यो की सिद्धि में योग्यतानुसार प्रयोग किये गये ये सभी उपाय परस्पर संघर्ष भाव को प्राप्त करके उसके लिए स्थायी अर्थसम्पत्तियों को प्रदान कर रहें हैं–

अनारतं तेन पदेषु लम्भिता विभज्य सम्यग्विनियोगसत्क्रियाः।
फलन्त्युपाया : परिबृंहितायतीरूपेत्य संघर्षमिवार्थसम्पदः।।[3]

समयानुकूल नीतिमार्ग का पालन करने वाला पुरूष सदा अभ्युदय को प्राप्त होता हैं। अन्धकार के उपर विजय प्राप्त करने वाले सूर्य की तरह वह शत्रुओं पर आधिपत्य प्राप्त करता हैं। सम्मान सभी प्रकार से रक्षणीय हैं। इसकी रक्षा सर्वोपरि हैं। इसकी रक्षा हेतु स्वाभिमानी पुरूष सुखपूर्वक अपने प्राणों का परित्याग भी कर देते हैं, किन्तु तिरस्कारयुक्त जीवन कभी व्यतीत नहीं करते । यथा उष्णतारहित भस्म को सभी लोग पादाक्रान्त कर सकते हैं, किन्तु प्रज्वलित अग्नि पर कोई भी पैर रखने का साहस नहीं करता। इसी तरह तेजस्वी व्यक्तियों को कोई भी अभिभूत करने की कामना नहीं करता । अतः मनस्वी स्वाभिमानी पुरूषों को स्वनिहित तेज का प्रकाशन करना ही चाहिए –

ज्वलितं न हिरण्यरेतसं चयमास्कन्दति भस्मनां जनः ।
अभिभूतिभयादसूनतः सुखमुज्झन्ति न धाम मानिनः ।।[4]

स्वाभिमानी पुरुष दूसरों की समुन्नति को भी सहन नहीं करते। यथा जलद का गर्जन सिंह के लिए असह्य होता है और प्रतिक्रिया के रूप में स्वयं गर्जन करके वह अपने तेज को प्रकट करता है–

किमपेक्ष्य फलं पयोधरान् ध्वनतः प्रार्थयते मृगाधिपः ।
प्रकृतिः खलु सा महीयसः सहते नान्यसमुन्नतिं यथा।।[5]

राजनीति में कूटनीति का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। 'शठे शाठ्यं समाचरेत्' उक्ति सत्य ही है। जो पुरुष मायावियों, प्रवंचकों के प्रति स्वयं भी मायावी, छल– कपट करने वाले नहीं बनते, वे लोक में पराभव को प्राप्त करते हैं।
महाकवि भारवि आगे कहते राजनीति में क्रोध का भी स्थान है; किन्तु क्रोध के वशीभूत होकर शीघ्रता में कोई कार्य नहीं करना चाहिए। भावुकता तथा उतावलेपन के कारण प्रयोजन में सफलता नहीं मिलती। पक्ष – विपक्ष की समस्त समस्याओं पर विचार विमर्श करके ही संधि – विग्रह के प्रति उद्योग करना चाहिए; क्योंकि अविवेक ही सकल आपदाओं, अनर्थों, असफलताओं का मूल कारण होता है –

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्।
वृणृते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः।।[6]

धैर्यपूर्वक अनुकूल अवसर की प्रतीक्षा करनी चाहिए, तभी पूर्ण सफलता सम्भव है। इसीलिए युधिष्ठिर प्रथमतः शत्रु के समस्त वृत्तान्तों को जानने का प्रयास करते हैं, उस पर शीघ्र आक्रमण के पक्ष में नहीं है। प्रजाजनों की असंतुष्टि पर राजा को जीतना होता है और असंतुष्ट अन्य राजाओं से भी सहायता प्राप्त की जा सकती है। राज्य में व्याप्त आन्तरिक असंतोष अन्य राजाओं राजा के पराजय का कारण बनता है। युधिष्ठिर के सान्त्वनाप्रधान वचनों द्वारा वास्तव में रीजनीति – विषयक उपयोगी तत्वों का प्रकाशन हुआ है और इस तरह कवि की दूरदर्शिता का बोध होता है। युधिष्ठिर शान्तिप्रिय, धैर्ययुक्त, सहनशील अवश्य हैं, फिर भी शत्रु के प्रति वे उदासीन नहीं हैं। शासन – व्यस्था, प्रजा – सम्बन्ध, आर्थिक – दशा, अन्य राजाओं से सम्बन्ध इत्यादि शत्रु के रहस्यों को जानने के लिए वे एक गुप्तचर को हस्तिनापुर भेजते हैं। विवके पूर्व कार्य में वे अधिक विश्वास करते हैं। अनुकूल समय की प्रतीक्षा में अलग लाभ है, आन्तरिक विद्रोह, असन्तोष का लाभ भी सुलभ होगा – इत्यादि तथ्यों से वे अवगत हैं। दुर्योधन की प्रवृत्ति से वे पूर्ण परिचित हैं। प्रकृति से वह अभिमानी, मायावी, स्वार्थी है। विनयशीलता, प्रजावत्सलता का आवरण कृत्रिम है। उसका यह व्यवहार चिरस्थायी नहीं है। स्वभावतः क्रोधी होने के कारण वह शीध्र ही मन्त्र, प्रभु तथा उत्साह शक्तियों से रहित हो जाएगा और इनके अभाव में उसके मित्र, मन्त्री, प्रजाजन सभी असन्तुष्ट हो जायेंगे और इस प्रकार स्वगत दोषों के कारण वह निश्चित रूप से विनाश को प्राप्त होगा –

बलवानपि कोपजन्मनस्तमसो नाभिभवं रुणाद्धि यः।
क्षयपक्ष इवैन्दवीः कलाः सकलाः हन्ति स शक्तिसम्पदः।।[7]
अणुरप्युपहन्ति विग्रहः प्रभुमन्तः प्रकृतिप्रकोपजः।
अखिलं हि हिनस्ति भूधरं तरुशाखाऽन्तनिघर्षजोऽनलः।।[8]

निष्कर्ष –

अतः हम कह सकते है कि महाकवि भारवि ने अपने महाकाव्य किरातार्जुनीयम् में राजनीति – विषयक उन सभी सारगर्भित तत्वों का समावेशन कर राजाओं के स्वभाव का सुन्दर परिचय दिया, जिनमें सहज रूप से अभिमान, आत्मश्लाघा की भावना होती है। अतः श्रुतिसुखद प्रशंसात्मक मनोहर वचनों को वे सुनना पसन्द करते हैं, भले ही वह तथ्यहीन मिथ्या हो। किन्तु हितकर होने पर भी अप्रिय सुनना नहीं चाहते। किन्तु राजा का कर्त्तव्य है कि वह हितकर बात कहने वाले गुप्तचर, सेवक, सचिव इत्यादि की बातों, मन्त्रणाओं को ध्यानपूर्वक सुने और सेवकों सचिवों को भी चाहिए वे सदैव हितकर उपदेश दें।
इस प्रकार महाकवि भारवि ने काव्य की मधुर सरस शैली द्वारा राजनीति तथा व्यवहारिक ज्ञान के अत्यन्त गूढ़ तथा उपयोगी तथ्यों का उद्घाटन किया है। इन विषयों से सम्बन्धित कवि का गहन अनुभव प्रस्तुत काव्य में सुस्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित हुआ है।

सन्दर्भ

1. संस्कृत साहित्य का बृहद इतिहास (डॉ0 पुष्पा गुप्ता)।
2. किरातार्जुनीयम् (सटिप्पणमल्लिनाथकृत 'घण्टापथसहितज्योत्सना– हिन्दी व्याख्यासमुद्भासितम्) सम्पूर्ण।
3. किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग) डॉ राजेन्द्र प्रसाद मिश्र।
4. किरातार्जुनीयम् :'सुबोध' संस्कृत हिन्दी टीका प्रथम सर्ग।
5. किरातार्जुनीयम् 'सर्वड. कषा', श्री बदरी नारायण मिश्र।
6. श्री महाभारत, प्रो0मण्डन मिश्र।
7. किरातार्जुनीयम् : एक समीक्षा, डॉ प्रभा अवस्थी।
8. किरातार्जुनीयम् "घण्टापथ" संस्कृत व्याख्या, डॉ सुधाकर मालवीय।
9. किरातार्जुनीयम् : 'घण्टापथ' सुधा टीका, श्री गंगाधर मिश्र।
10. किरातार्जुनीयम् : संस्कृत टीका, आचार्य शेष राज शर्मा।
11. किरातार्जुनीयम् डॉ0 पंचबहादुर सिंह।
12. किरातार्जुनीयम् डॉ0 कविराम कैलाश पाण्डेय।
13. किरातार्जुनीयम् डॉ0 डॉ0 नर्मदेश्वर कुमार त्रिपाठी।
14. करातार्जुनीयम् श्री बदरी नारायण मिश्र।
15. किरातार्जुनीयम् डॉ0 बाबूराम त्रिपाठी।